चित्त चाह्या नासिका भूखन, खुसबोए लेत चित्त चाहे।
चित्त चाही जोत सोभा धरे, सुख आसिक अंग न समाए।। १० ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने मन की चाहना अनुसार ही नासिका में आभूषण पहने हैं। नासिका से चित्त चाही सुगन्धि लेते हैं। नासिका का नूर भी श्री राजजी का चित्त चाहा है। इसका सुख आशिक रूहों के मन में नहीं समाता।

हक सुख खुसबोए के, कई नए नए भोग लेत।
ले ले हक विवेक सों, नए नए रूहों सुख देत।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज खुशबू के नए-नए सुख इच्छा अनुसार लेते हैं और ले-लेकर अपने विवेक से रूहों को देते हैं।

कई कई लाड़ रूहन के, लेत देत अरस–परस।
नित नए सुख देत सनेह सों, जानों नया दूजा लिया सरस।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज कई तरह से रूहों से अरस-परस (परस्पर) लाड़ करते हैं और नित्य ही नए-नए सुख बड़े प्यार से रूहों को देते हैं। हर सुख पहले सुख से अधिक रसीला लगता है।

नित लेत प्रेम सुख अर्स में, जानों आज लिया नया भोग।
यों हक देत जो हम को, नित नए प्रेम संजोग।। १३ ।।

हम रूहें नित्य ही ऐसे सुख परमधाम में लेती हैं। हर रोज ऐसा लगता है कि आज का सुख नया है। इस तरह से श्री राजजी महाराज हम रूहों को रोज ही नए प्रेम के सुख संजोकर देते हैं।

जिमी जल तेज वाए बन, जो कछू बीच आसमान।
सब खुसबोए नूर में, सुख देत रूहों सुभान।। १४ ।।

जमीन, जल, अग्नि, वायु, वन जो कुछ भी आसमान के नीचे हैं, सब परमधाम में खुशबू और नूर से भरपूर हैं, जिनके सुख श्री राजजी महाराज रूहों को देते हैं।

महामत कहे हक नासिका, याकी सोभा न आवे सुमार।
कछू बड़ी रूह मोमिन जानहीं, जाको निस दिन एही विचार।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की नासिका की शोभा बेशुमार है। इस शोभा को श्री श्यामाजी और रूहें ही जानती हैं, जो रात-दिन वहीं परमधाम में ही रहती हैं और इसके सुख लेती हैं।

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ८९५ ॥

हक मासूक की जुबान की सिफत

जाको नामै रसना, होसी कैसी मीठी हक।
जिनकी जैसी बुजरकी, जुबां होत है तिन माफक।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की रसना जिसका नाम ही रसना है, वह कितनी मीठी होगी? जैसी श्री राजजी की साहेबी है, वैसी ही उनकी रसना भी है।

Nijanand App

केहेनी में न आवहीं, विचार देखें मोमिन।
होए जाग्रत अरवा अर्स की, कछू सो देखे रसना रोसन।। २ ।।

हे मोमिनो! विचार करके देखो। श्री राजजी महाराज की रसना के गुण कहे नहीं जाते। यदि कोई अर्श की रूह जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से जागृत हो गई, तो वही इस रसना के रस को ले सकती है।

अति मीठी जुबां मासूक की, देत आसिक को सुख।
कछू अर्स सहूरें सुख लीजिए, पर कह्यो न जाए या मुख।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज की जबान बहुत मीठी है जो आशिकों को बहुत सुख देती है, यदि जागृत बुद्धि के विचार से रसना के सुख लें तो भी इस जबान से वर्णन नहीं हो सकता।

ए याद किए हक रसना, आवत है इस्क।
जिन इस्कें अर्स देखिए, सुख पाइए हक मुतलक।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज की मीठी रसना के याद आते ही इश्क आ जाता है, जिस इश्क से परमधाम नजर में आता है और श्री राजजी महाराज के सुख निश्चित ही मिलते हैं।

और सुख हक दिल में, जाहेर होत रसनाए।
एह सिफत किन बिध कहूं, जो रेहेत हक मुख माहें।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल के सुख, मीठी रसना से ही पता चलते हैं। ऐसी रसना के सुख कैसे कहूं जो श्री राजजी महाराज के मुख में रहती है।

बोहोत सुख हक तन में, जाहेर करें हक नैन।
सब पूरा सुख तब पाइए, जब कहे रसना मुख बैन।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज के तन में अखण्ड सुख भरपूर हैं जो उनके नैनों से पता चलता है, परन्तु पूरे सुखों का पता तो तब लगता है जब श्री राजजी अपनी रसना से बोलते हैं।

हर अंग सुख दें हक के, ऊपर जाहेर सुख जुबान।
बड़ा सुख रूहों होत है, जब हक मुख करें बयान।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज का हर एक अंग सुख देता है, परन्तु उस पर रसना के सुख सबसे बड़े हैं। जब श्री राजजी महाराज अपनी रसना से बोलते हैं तो रूहों को बहुत बड़ा सुख प्राप्त होता है।

ए बेवरा पाइए बीच खेल के, कम ज्यादा अर्स में नाहें।
समान अंग सब हक के, ए विचार नहीं अर्स माहें।। ८ ।।

परमधाम में कम ज्यादा होता नहीं है। किस अंग का सुख कम है किसका ज्यादा, यह तो खेल में ही पता चलता है। श्री राजजी महाराज के सभी अंग समान सुख देने वाले हैं। वहां कम ज्यादा का विचार ही नहीं है।

बोहोत बातें सुख अर्स के, सो पाइयत हैं इत।
सुख उमत को अर्स में, ए जानती न थीं निसबत।। ९ ।।

अर्श के सुखों की बहुत बातें हैं जिनकी लज्जत यहां खेल में मिलती है। परमधाम में रूहों को, जो श्री राजजी की अंगना हैं, इन सुखों की जानकारी नहीं थी।

Nijanand App

सुख जानें न हक पातसाही, सुख जानें न हक इस्क।
सुख जानें ना रूहें लाड़ के, तो इत इलम दिया बेसक।। १० ।।

श्री राजजी महाराज की साहेबी और दूसरा वाहेदत के इश्क के सुख को रूहें नहीं जानती थीं और न श्री राजजी महाराज के लाड़ को ही रूहें जानती थीं, इसलिए श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का बेशक ज्ञान दिया।

तो हक अंग सुख खेल में, बेवरा करत हुकम।
अजूं न आवे नजरों सरूप, ना तो क्यों वरनवाए खसम।। ११ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज के अंगों के सुख का इस खेल में उनके हुकम से विवरण दिया जा रहा है। अभी भी श्री राजजी महाराज के स्वरूप के दर्शन नहीं होते नहीं तो उनके अंगों के सुख वर्णन क्यों किए जाते?

हकें हम रूहों वास्ते, अनेक वचन कहे मुख।
सो रूहें जागे हक इस्क का, आपन लेसी अर्स में सुख।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने मुखारबिन्द से हम रूहों के वास्ते अनेक वचन कहे हैं, इसलिए हम रूहें अब जागकर श्री राजजी महाराज के इश्क का सुख परमधाम में लेंगी।

सुख अनेक दिए हक रसनाएं, और सुख अलेखे अनेक।
सो जागे रूहें सब पावहीं, ताथें रसना सुख विसेक।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना ने बहुत सुख दिए हैं, फिर भी अनेक सुख बाकी हैं। परमधाम की रूहें उन सुखों को जागृत होने पर प्राप्त कर सकेंगी, इसलिए रसना के सुख सबसे विशेष बताए हैं।

हकें खेल देखाया याही वास्ते, सुख देखावने अपने अंग।
सुख लेसी बड़ा इस्क का, रूहें ले विरहा मिलसी संग।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज ने सुख के वास्ते ही अपनी अंगनाओं को यह खेल दिखाया है। रूहें श्री राजजी महाराज के विरह के बल पर धनी से मिलेंगी और इश्क का सुख लेंगी।

दायम इस्क सबों अपना, रूहें केहेती अपनी जुबान।
याही रसना बल वास्ते, खेल देखाया सुभान।। १५ ।।

रूहें अपनी जबान से सदा ही अपने इश्क को बड़ा कहती थीं। रूहों की रसना के बल को देखने के लिए ही श्री राजजी महाराज ने रूहों को खेल दिखाया है।

एक हुकम जुबां के सब हुआ, तिन हुकमें चले कई हुकम।
सो जेता सब्द दुनीय में, ए सब हम वास्ते किया खसम।। १६ ।।

श्री राजजी की जबान के हुकम से ही यह सब कुछ हो गया। अब उनके हुकम के अधीन और कई हुकम काम कर रहे हैं। दुनियां में जो कुछ भी धर्मग्रंथ हैं, सब हम रूहों के वास्ते ही बनाये हैं।

हक जुबान की बुजरकी, किया खेल में बड़ा विस्तार।
सो सुख लेसी हम अर्स में, जिनको नहीं सुमार।। १७ ।।

श्री राजजी की रसना की साहेबी का ही खेल में बड़ा विस्तार है। अब इस खेल के सुख हम परमधाम में लेंगे, जो बेशुमार हैं।

Nijanand App

जेती चीज जरा कोई खेल में, सो हक हुकमें हलत चलत।
सो सुख दिए हक रसनाएं, हम केती करें सिफत।। १८ ।।

संसार में जो कुछ भी है वह श्री राजजी महाराज के हुकम से ही चल रहा है। यह सब खेल के सुख श्री राजजी की रसना से ही हमें मिले हैं। इनके सुखों की महिमा हम कहां तक बताएं?

कलाम अल्ला या हदीसें, सास्त्र पुरान या वेद।
ए सब सुख लेवे मोमिन, हक रसना के भेद।। १९ ।।

कुरान हो या हदीसें, शास्त्र-पुराण हो या वेद, इन सब ग्रन्थों से श्री राजजी महाराज की साहेबी के भेद के सुख मोमिन लेते हैं।

खेल किया याही वास्ते, हकें सुख दिए जुबान।
सो मेरी इन जुबान सों, क्यों कर होए बयान।। २० ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के वास्ते ही खेल बनाया और अपनी रसना के एक हुकम से उन्हें यह सुख दिए। अब मेरी जबान उन सुखों को कैसे वर्णन करे?

ए बयान होसी बीच अर्स के, हम रूहें मिल जासी जब।
हक जुबान का बेवरा, हम लेसी अर्स में तब।। २१ ।।

जब हम रूहें परमधाम में इकट्ठी होंगी तब इन सब बातों का पता चलेगा। तब हम श्री राजजी महाराज की रसना के विवरण की हकीकत को जान सकेंगी।

बड़े बयान बातें कई, जो हक जुबांएं दिए इत।
इत बेवरा कर जाए अर्स में, लेसी लज्जत बीच खिलवत।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना ने जो खेल में सुख दिए हैं, इनकी बड़ी-बड़ी बातों की लज्जत परमधाम में जागकर पीछे लेंगी।

ए बारीक सुख अर्स के, हक जुबांएं दई न्यामत।
और न कोई पावहीं, बिना हक निसबत।। २३ ।।

इन खास बातों के सुखों को, जो श्री राजजी महाराज की रसना ने ही हमें दिए हैं, बिना हम रूहों के इसे और कोई नहीं पा सकता।

हक रूहों को बुलाए के, नजीक बैठाई ले।
ए जाहेर करत है रसना, ए जो अन्तर का सनेह।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज ने हम रूहों को बुलाकर अपने पास बिठा लिया। यह श्री राजजी महाराज के अन्दर के इश्क को उनकी रसना बताती है।

मीठी जुबां बोलत मासूक, रूहें प्यारी आसिक सों।
ऐसा मीठा अर्स खावंद, जाके बोल चुभें हिरदे मों।। २५ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज अपनी मीठी रसना से अपने आशिक प्यारी रूहों से बोलते हैं। ऐसे रसीले श्री राजजी महाराज हमारे हैं, जिनके मीठे बोल हमारे दिल में चुभते हैं।

Nijanand App

प्यारी रसना सों अनेक, प्यारी बातें करें बनाए।
प्यारे प्यारी रूह बीच में, ए गुन जुबां किने न गिनाए।। २६ ।।

अपनी प्यारी रसना से श्री राजजी महाराज अपने प्यारे आशिक रूहों से प्यारी-प्यारी बातें करते हैं। इस तरह से श्री राजजी महाराज और रूहों की प्यारी बातों के गुण जबान से कहे नहीं जाते।

मीठी जुबां मीठे वचन, मीठा हक मीठा रूहों प्यार।
मीठी रूह पावे मीठे अर्स की, जो मीठा करे विचार।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना के मीठे वचन अपनी रसीली मीठी जबान से रूहों को प्यार से देते हैं। परमधाम की रस भरी मीठी रूहें ही इस रस भरे परमधाम की मीठी बातों पर रसीला विचार करती हैं।

प्यारी खिलवत में प्यारी रसना, होत वचन कदीम।
सो इन जुबां प्यार क्यों कहूं, जो हक हादी रूहें हलीम।। २८ ।।

प्यारे मूल-मिलावे में रस भरी रसना से हमेशा से बातचीत होती है। इस जबान से उस मीठे प्यार का कैसे वर्णन करें जो श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहों के बीच गुझ मीठी बातों का है।

सब अंग जिनके इस्क के, तिनकी कैसी होसी जुबान।
अर्स रूहें जानें जाग्रत, जो रहें सदा कदमों सुभान।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग इश्क से भरे हैं तो फिर उनकी रसना कैसी प्यार भरी रसीली होगी? इसे परमधाम की रूहें ही जानती हैं, जो सदा श्री राजजी के साथ रहती हैं।

मेरी रूह देखे सहूर कर, जाके नख सिख लग इस्क।
जुबां कैसी तिन होएसी, और बानी बका अर्स हक।। ३० ।।

हे मेरी रूह! तू विचार करके देख। जिन श्री राजजी महाराज का नख से शिख तक इश्क का ही तन है, उनकी जबान कैसी रसभरी होगी? अखण्ड परमधाम में उनकी वाणी कैसी होगी?

हक रसना बोले जो अर्स में, जिन किन को वचन।
सो सब कारन जानियो, वास्ते सुख रूहन।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज परमधाम में जिस किसी से भी बातें करते हैं, वह सब रूहों को सुख देने के वास्ते ही बोलते हैं।

खेलावत हक बोलाए के, या पंखी या पसुअन।
सो सब रूहों वास्ते, सब को एह कारन।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों के वास्ते ही पशु या पक्षियों को बुलाकर खेल खिलाते हैं। सब कुछ रूहों के वास्ते ही है।

खेलते बोलते नाचते, या देखें खेल लराए।
सो सब वास्ते रूहन के, कई विध खेल कराए।। ३३ ।।

पशु-पक्षी खेलकर, बोलकर, नाचकर या लड़कर कई खेल दिखाते हैं। यह सब रूहों के वास्ते होता है, जो तरह-तरह के खेल कराए जाते हैं।

Nijanand App

कहूं केती बातें हक रसना, निपट बड़ो विस्तार।
क्यों कहूं जो किए रूहोंसों, हक जुबां के प्यार।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना के गुण कितने बताऊं? इसका बहुत बड़ा विस्तार है। श्री राजजी महाराज ने अपनी रसना से रूहों से कितना प्यार किया है, उसे कैसे बताऊं?

हक रसना गुन खेलमें, पाव हरफ को होए न सुमार।
तो जो गुन रसना अर्स में, ताको क्यों कर पाइए पार।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना के गुण खेल में एक रंच मात्र भी नहीं बताए जा सकते, तो परमधाम में रसना के गुणों का कैसा पारावार होगा?

ए बेवरा जानें रूहें अर्सकी, जाको हुआ हक दीदार।
जाए सिफायत हुई महंमद की, याको जाने सोई विचार।। ३६ ।।

परमधाम की रूहें ही इस रसना के विवरण को जान सकती हैं, जिनको उनके दर्शन हुए हों। जिनकी सिफत रसूल साहब ने की है, वही मोमिन इसका विचार करेंगे।

हक रसना गुन जानें रूहें, जाको निस दिन एही ध्यान।
ए खेल कबूतर क्या जानहीं, हक रसना के बयान।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना के गुण को रूहें ही जानती हैं, जो रात-दिन इसमें मग्न रहती हैं। यह संसार के क्षुद्र जीव श्री राजजी महाराज की रसना के गुणों को कैसे जान सकते हैं?

जो कछू बोले हक रसना, सो सब वास्ते रूहन।
और जरा हक दिलमें नहीं, ए जानें दिल अर्स मोमिन।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना जो कुछ बोलती है, वह सब रूहों के वास्ते है। रूहों के सिवाय श्री राजजी के दिल में कुछ नहीं है। यह रूहें ही जानती हैं, जिनके दिल को श्री राजजी ने अर्श किया है।

जो कछू बोलें हक जुबांन, सो सब रूहों के हेत।
अर्स बोल खेल या चलन, या जो कछू लेत देत।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज रसना से जो कुछ कहते हैं, वह सब रूहों के प्यार, स्नेह के वास्ते है। परमधाम में बोलना, चलना, खेलना, लेना और देना सब रूहों के वास्ते होता है।

हुकम कहावे मेरी रूह पे, जो हुई मुझमें बीतक।
सो कहूं अर्स रूहों को, जो दिए सुख रसना हक।। ४० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज का हुकम ही मेरी बीतक मुझ से कहलवा रहा है। अब परमधाम की रूहों को श्री राजजी की रसना के सुख को बताती हूं।

हक रसना के सुख जो, आवे ना गिनती माहें।
कई सुख अलेखे अपार, क्यों कहे जांए जुबांए।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना के सुख गिनती में नहीं आते। कई सुख अलेखे, बेशुमार हैं जो इस जबान से कहे नहीं जाते।

Nijanand App

मीठी मीठी माहें मीठी मीठी, रस रसीली रसना बान।
सुख सुखके माहें कई सुख, सुख क्यों कहूं रसना सुभान।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज की मीठी रसना की मीठी-मीठी बातें अति रसीली हैं। इस तरह से श्री राजजी के सुख के अन्दर कई सुख हैं, श्री राजजी की रसना के सुख तो कहे ही नहीं जा सकते।

मोहे इलम दिया आए अपना, तासों प्यार दिया मुझको।
चौदे तबक कायम किए, केहेलाए मेरी रसना सों।। ४३ ।।

मुझे श्री राजजी महाराज ने आकर जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया। उससे अपना प्यार दिया (अपनी साहेबी मुझे दी)। मेरी जबान से कहलाकर चौदह लोकों को अखण्ड मुक्ति दिलवाई।

एक नुकते इलम अपने, दुनी बका कराई मुझसे।
तो गंज अंबार जो सागर, कैसे होसी हक दिलमें।। ४४ ।।

केवल अपने तारतम ज्ञान के बिन्दु से दुनियां को मुझसे अखण्ड करवाया है तो श्री राजजी के दिल में कितने गंजान गंज सागर सुख के भरपूर होंगे।

जो कोई सब्द बीच दुनियां, सो उठे हुकम के जोर।
ए गुझ सुख हक रसना, कछू मोमिन जानें मरोर।। ४५ ।।

दुनियां के अन्दर जितने भी धर्मग्रन्थ हैं, वह श्री राजजी की हुकम की शक्ति से बने हैं। श्री राजजी महाराज की रसना के छिपे सुख को मोमिन ही जानते हैं।

बका करी जो दुनियां, दिया सब को हक इलम।
सो इलम सिफत करे हमारी, हुकमें किया वास्ते हम।। ४६ ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के इलम को देकर सारी दुनियां को अखण्ड मुक्ति प्रदान की। वही श्री राजजी का इलम हमारी सिफत कर रहा है। यह सब श्री राजजी महाराज के हुकम से हमारे वास्ते ही हुआ है।

ए जो बका किए हम वास्ते, जाने कायम होए सिफत।
सिफत फना की ना रहे, ए हुकमें हम को दई न्यामत।। ४७ ।।

यह दुनियां को जो अखण्ड किया वह भी हमारे ही वास्ते है, ताकि यह अखण्ड होकर मोमिनों के गुण गाती रहे। संसार के अन्दर तो महिमा नष्ट हो जाती है, पर हमारी महिमा हमेशा अखण्ड रहेगी। यह न्यामत हमको श्री राजजी ने दी है।

मेहेर करी हक रसनाएं, सो किन विध कहूं विस्तार।
बका सब्द जो उचरे, सो देने रूहों सुख अपार।। ४८ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना ने जो रूहों पर मेहर की है, उसकी हकीकत कैसे बताऊं? श्री राजजी महाराज की रसना ने यह कुलजम सरूप की अखण्ड वाणी हमें दी। वह रूहों को अखण्ड सुख देने के वास्ते दी है।

Nijanand App

सब के हक हमको किए, हक रसनाएं बीच बका।
ए सुख इन मुख क्यों कहूं, जो दिया हादी रूहोंको भिस्तका।।४९।।

श्री राजजी महाराज ने हमारे जीवों को पहली बहिश्त में बिठाकर सारे दुनियां के जीवों का खुदा बना दिया। ऐसे श्री राजजी महाराज की रसना के इलम ने सबको अखण्ड मुक्ति दी। इस सुख का वर्णन अब यहां कैसे करें?

अर्स के सुख तो हमेसा, घट बढ़ इत नाहें।
पर ए नया सुख नई साहेबी, कायम कर दिया भिस्त माहें।।५०।।

परमधाम के सुख सदा अखण्ड हैं। वहां घट-बढ़ नहीं होती, पर यह नया सुख और नई साहेबी हम रूहों के वास्ते पहली बहिश्त में अखण्ड कर दी है।

अर्स सुख और भिस्तका सुख, ए खेल में दिए सुख दोए।
इन दोऊ में दिए सुख खेलके, ए हक रसना बिना क्यों होए।।५१।।

परमधाम का सुख और पहली बहिश्त के सुख दोनों हमको श्री राजजी महाराज ने खेल में दिए। परमधाम में और पहली बहिश्त में, इन दोनों में खेल के सुख दिए। यह सब श्री राजजी महाराज की रसना के बिना कैसे हो सकता है?

दई भिस्त चौदे तबक को, सबों पूरा इस्क इलम।
सो सब सेवें हम को, सबों बल रसना खसम।।५२।।

चौदह तबकों के लोगों को इश्क और इलम देकर बहिश्तों में कायमी दी। अब वह सब जीव हमारे जीवों को खुदा मानकर पूजा करेंगे। यह सब श्री राजजी महाराज की रसना का बल है।

पेहेले प्यार दिया मुझे इलम सों, सो मुझपे इलम दिवाए।
सब दुनियां को आरिफ कर, मुझ आगे सबपे कथाए।।५३।।

पहले श्री राजजी महाराज ने प्यार करके मुझे अपना इलम दिया, फिर दुनियां को मुझसे ज्ञान दिलवाया, सारी दुनियां को विद्वान बनाकर मुझे उनका उपदेशक बनाया।

ए सब हक रसनाएं किया, इलम प्यारा लग्या सबन।
सो इलमें आरिफ पूजें मोहे, असल अर्स में हमारे तन।।५४।।

यह सब श्री राजजी महाराज की रसना के कारण ही सबको जागृत बुद्धि का इलम प्यारा लगा। अब वह पढ़े-लिखे ज्ञानी अगुए मेरी पूजा करेंगे जबकि असल तन तो परमधाम में हैं।

प्यार लग्या मोहे जिनसों, हकें बड़ा किया सोए।
सो सबपे केहेलाए हुकमें, सब विध सुख दिया मोहे।।५५।।

जो मोमिन मुझे बड़े प्यारे थे, उनको श्री राजजी महाराज ने बड़ी शोभा दी। फिर श्री राजजी महाराज ने अपने हुकम से उन मोमिनों से मेरी महिमा गवाई और सब तरह से बड़ाई का सुख मुझे दिया।

ए सुध नहीं अजूं मोमिनों, जो सुख दिए हक रसनाएं।
हकें सुख दिए आप माफक, सो कह्या जाए न इन जुबांएं।।५६।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी रसना से जो सुख दिए हैं, उनकी खबर मोमिनों को अभी तक नहीं है। श्री राजजी महाराज ने अपने समान ही सब मोमिनों को सुख दिया है, जो यहां की जबान से कहा नहीं जा सकता।

Nijanand App

कर कायम हक रसना रस, सचराचर दिए पोहोंचाए।
यों रसना के रस हम को, सुख कई विध दिए बनाए।।५७ ।।

श्री राजजी की रसना के रस, तारतम वाणी से चर-अचर जीवों को अखण्ड कर दिया। इस तरह से श्री राजजी महाराज की रसना ने हमें कई तरह के सुख दिए।

सबों इलम पढ़ाए आलम किए, जिनसों था मेरा प्यार।
सो सुख हक रसनाएं दिया, करके बका विस्तार।।५८ ।।

मैंने सब मोमिनों को जिनसे मुझे बहुत प्यार था, को जागृत बुद्धि के ज्ञान से विद्वान बनाया। श्री राजजी की रसना की वाणी से सब परमधाम का वर्णन हुआ।

ए कायम सुख हक तरफके, हक इलम इस्क हुकम।
सुख लाड़ लज्जत हुज्जत के, दिए कायम मेरे खसम।।५९ ।।

यह सब अखण्ड सुख श्री राजजी की रसना के इलम, इश्क और हुकम से मिले। अपनी निसबत होने से ही मेरे धनी ने रूहों को लाड़ लज्जत के अखण्ड सुख दिए।

सुध न हुती हक साहेबी, ना सुध इलम वाहेदत।
सुध ना हुज्जत निसबत, सो सुध दई जुबां खिलवत।।६० ।।

मुझे श्री राजजी महाराज की साहेबी की, इलम की, वाहेदत की और अंगना होने की सुध नहीं थी। वह सब खिलवतखाने की सुध श्री राजजी महाराज की रसना ने दी।

हक बका सुख कई विध, अर्स में नहीं सुमार।
बिन बूझे सुख हम लेते, हुते न खबरदार।।६१ ।।

श्री राजजी महाराज के अखण्ड सुख परमधाम में कई तरह के (बेशुमार) हैं। हम बिना समझे ही इन सुखों को लेते रहे, क्योंकि हमें धनी के इश्क और साहेबी की जानकारी नहीं थी।

सो आठों भिस्त कायम कर, दिए अर्स पट खोल मारफत।
तिनमें पुजाए सुख दिए, कर जाहेर हक निसबत।।६२ ।।

अब श्री राजजी महाराज ने आठ बहिश्तें कायम कर दीं और परमधाम की पहचान जागृत बुद्धि के ज्ञान से करा दी। तब हमें अपनी अंगना बताकर दुनियां से हमारी पूजा कराकर सुख दिए।

हक रसना सुख दिए देत हैं, और सुख देंगे आगूं जे।
सो इतथें सब हम देखत, सुख केते कहूं रसना के।।६३ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना ने हमको अनेक प्रकार के सुख दिए हैं, दे रहे हैं और आगे देंगे। इन सुखों को हम खेल में बैठकर देख रहे हैं। ऐसे लाड़ले श्री राजजी महाराज की रसना के सुखों को कैसे कहूं?

हक रसनाएं ऐसी सुध दई, हुआ है होसी बका माहें।
यों खोली अंतर रूह नजर, ऐसी हुई ना रूहोंसों क्यांहें।।६४ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना से ऐसी जानकारी हो गई है कि परमधाम में जो कुछ हुआ है या आगे जो कुछ होगा, वह हमारी आतम की दृष्टि खोलकर जानकारी दी है। ऐसा सुख (जानकारी का) रूहों को कभी भी मिला नहीं था।

Nijanand App

कहूं केते सुख हक रसना, जैसे आप अलेखे अपार।
सो सब सुख बकामें रूहों, जाको होए न काहूं सुमार।। ६५ ।।

जैसे श्री राजजी महाराज के सुख बेशुमार हैं वैसे ही उनकी रसना के सुख बेशुमार हैं। कैसे कहे जाएं? यह सभी अखण्ड सुख रूहों को श्री राजजी महाराज परमधाम में देते हैं, जो बेशुमार हैं।

ए नेक कह्या बीच खेल के, हक रसना के गुन।
ए सब बातें मिल करसी, आगूं हक बका वतन।। ६६ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना के थोड़े से गुण हमने खेल में बताए हैं। यह सब सुखों की बातें, अखण्ड परमधाम में जब सब मिलेंगे, श्री राजजी के सामने होंगी।

सुनो महामत रसना रस, और सुनाइयो मोमिन।
जो हुकम कहे तोहे हेत कर, हक रसना के गुन।। ६७ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम मुझे प्यार से रसना के गुण बतलाता है। श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की रसना के उन गुणों को सुनो और मोमिनों को सुनाओ।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ८८२ ॥

हक मासूकके वस्तर

देत निमूना बीच नासूत, जानों क्योंए आवे माहें दिल।
आगूं मेला बड़ा होएसी, लेसी मोमिन ए विध मिल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के वस्त्रों का नमूना मृत्युलोक में बैठकर बतला रही हूं, ताकि किसी तरह से रूहों के दिल में आ जाए। आगे जब सब सुन्दरसाथ इकट्ठे होंगे, तब इन सुखों को सब मोमिन मिलकर लेंगे।

एक देऊं निमूना दुनीका, जो पैदा दुनी में होत।
धागा होत है रूई का, और जवेरों जोत।। २ ।।

मैं दुनियां में जैसी चीजें पैदा होती हैं, वैसा नमूना बताती हूं। जैसे रुई का धागा और जवेरों से कपड़े बनाए जाते हैं।

धागा असल रूई तांतसा, जवेर जैसी जोत नंग।
हुकमें बनें ताके वस्तर, होए कैसा पेहेनावा अंग।। ३ ।।

रुई के पतले धागे से और नगों से जड़े जवेर की तरह परमधाम में श्री राजजी के वस्त्र आभूषण हुकम मात्र से बन जाते हैं। अब हुकम से बने वस्त्रों की शोभा कैसी होगी?

पैदा निमूना दुनी का, अर्स जिमिएं नहीं पोहोंचत।
दुनी निमूना हक को, ए कैसी निसबत।। ४ ।।

दुनियां में पैदा चीजों की उपमा परमधाम की चीजों को नहीं लगती। दुनियां की मिटने वाली चीजों की उपमा श्री राजजी महाराज के अखण्ड वस्त्रों को भला कहां दी जा सकती है?

Nijanand App